कारसदेव की गोटें : पाठ और विवेचन

(प्रयाग विश्वविद्यालय की डी० फिल्० उपाधि के लिए प्रस्तुत)

शोध - प्रबन्ध

●

लेखक

प्रताप चन्द्र मिश्र, एम०ए०

●

निर्देशक

डॉ० रामकुमार वर्मा

●

हिन्दी विभाग

प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग

सन् १९६९ ई०

कारसदेव की गोटें : पाठ और विवेचन

(प्रयाग विश्वविद्यालय की डी० फिल्० उपाधि के लिए प्रस्तुत)

शोध - प्रबन्ध

●

लेखक

प्रताप चन्द्र मिश्र, एम०ए०

●

निर्देशक

डॉ० रामकुमार वर्मा

●

हिन्दी विभाग

प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग

सन् १९६६ ई०

समर्पित

-०-

प्रो० डुनियल, कृष्णा और फरीना को....

- प्रताप

कारसदेव की गोटें : लौकिक वीर काव्य

भू मि का

भूमिका

जब मैं एम०ए० पूर्वार्द्ध में था मेरे यहां हिन्दी साहित्य के जर्मन विद्वान् डा० कोनराड माइस्नर ठहरे थे। वह कुमायूनी लोक साहित्य पर सामग्री एकत्रित करने आये थे। एक स्थान पर मेरे मित्र श्री कृष्णकुमार ने डा० माइस्नर का परिचय श्री रमानाथ शर्मा (प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय) से कराया। श्री शर्मा से ज्ञात हुआ कि उनका परिवार भोजपुर के ठेठ गांव से संबद्ध है और उनकी पत्नी श्रीमती कमला और बहन कु० चन्द्रकला वहां के काफी लोकगीत जानती हैं। डा० माइस्नर ने उनके काफी गीतों को टेप रिकार्ड किया। समय-समय पर मैं डा० माइस्नर की सहायता करता रहता था। बुन्देलखण्ड में बचपन बीतने के कारण लोक गीतों के प्रति आकर्षण, स्नेह स्वाभाविक था। एम०ए० हिंदी साहित्य से करने के बाद उन्होंने मुझसे लोक-साहित्य पर कार्य-अध्ययन करने का आग्रह किया क्योंकि सस्ते फिल्म-संगीत और आधुनिकता की चमक में ग्राम्य लोक-साहित्य एवं गीत समाप्त होते चले जा रहे हैं। डा० उदयनारायण तिवारी ने अपनी `भोजपुरी भाषा और साहित्य` पुस्तक में बुन्देली भाषा के संबंध में विवेचन करते हुए लिखा है कि बुंदेली में अधिक साहित्य नहीं है। साहित्य के दो रूप हैं -- एक वर्ग में शिक्षित जनों की रचनायें हैं और दूसरे वर्ग में अशिक्षित जनों का साहित्य है जिनमें प्रतिभा तो शिक्षित जनों के समान थी किन्तु किसी कारण शिक्षा प्राप्त नहीं कर सके। साहित्यिक प्रतिभा स्वभावगत, स्वाभाविक होती है। शिक्षित होने पर वह भाषा के रूप में कुछ बन-संवर कर प्रगट होती है। अशिक्षित होने पर आंचलिक बोली में मौखिक रूप में कुछ अनगढ़ता के साथ प्रगट होती है।

भारतेन्दु की तरह बुंदेली लोक आशुकवि ईसुरी थे जो किसी भी विषय पर किसी समय कविता कर सकते थे। प्रेमचन्द की तरह गांव में कथाकार हैं जो रोचकता के साथ घण्टों मनोरंजन कर सकते हैं। यह अवश्य है लोक साहित्यकार प्रसाद, पंत की तरह शब्दों का चमत्कार उत्पन्न नहीं कर सकते हैं। साधारण, संक्षिप्त रूप में लोक-साहित्य वन में खिले कुछ- सुन्दर पुष्प के समान है और साहित्यिक साहित्य

नगर के सम्पन्न पुरजन की वाटिका में यत्नपूर्वक कटे-छंटे, संवरे पुष्प की तरह है। सौन्दर्य दोनों में है, एक में अनगढ़ सौन्दर्य है और दूसरे में पर्याप्त नियंत्रित, प्रयास है। सरल मन को दोनों ही मुग्ध करते हैं। अधिकांश श्रेष्ठ संस्कृत साहित्य को लोक-साहित्य से प्रेरणा-सामग्री प्राप्त हुई है। रामायण, महाभारत, शकुन्तला, नल-दमयन्ती आदि की कहानियां लोक-जीवन में प्रचलित थीं जिन्हें महाकवियों ने अपनी कल्पना से उनमें घटा-बढ़ा कर अलौकिक सौन्दर्य की सृष्टि की।

बुन्देलखण्ड में लोक-साहित्य अत्यन्त समृद्ध है। खेद है कि अभी तक इसमें वैज्ञानिक रूप से कार्य कुछ भी नहीं हुआ है। यद्यपि यहां-वहां के विश्व-विद्यालयों और साहित्य सम्मेलन से बहती गंगा में हाथ कुछ लोगों ने धो लिया है और अपने नाम के आगे डाक्टर या तत्सम साहित्याचार्य की उपाधि लगाने का झूठा गौरव प्राप्त कर लिया है। उनके कार्य का सबसे बड़ा उपहास और क्या हो सकता है कि उन्होंने जिस विषय पर विशेषता प्राप्त करने का प्रमाणपत्र प्राप्त किया है उस पर कुछ भी प्रकाशित नहीं है और न उन्होंने ही प्रकाशित, सुसंपादित करने का प्रयास किया है। यह स्थिति कुछ सूर साहित्य के विशेषज्ञों की है। सूर साहित्य के अनेक आचार्य, डाक्टर, विशेषज्ञ हैं किन्तु किसी ने भी 'सूरसागर' का प्रामाणिक, वैज्ञानिक संपादन करने का प्रयास नहीं किया है, फिर भी सभी विश्व-विद्यालय सूर पर डाक्टरेट देते चले जा रहे हैं। वास्तविकता यह है कि आजकल विश्व-विद्यालयों आदि में निर्देशकों के पास शोध छात्रों की भीड़ लगा रहती है। समय का अभाव निर्देशक के पास रहता है और साधन का अभाव शोध-छात्र के पास (विशेषतया हिन्दी के)। फलस्वरूप यहां-वहां कि कतरन करके (१०००) हजार-पांच सौ पन्ने का शोध ग्रंथ निर्देशक के चरणों में डाल देता है और निर्देशक सिर दर्द टालने के लिए 'ओ० के०' कर देता है। हिन्दी के ९८ प्रतिशत शोध-ग्रंथों की संख्या इसी तरह की है।

विषय का बोध के लिए मैंने लोक-साहित्य विषयक ग्रंथ, पत्र-पत्रिका देखीं। 'हिन्दी सा.हत्य का बृहत् इतिहास' काशी नागरी प्रचारिणी सभा के लोक-साहित्य अंक में श्री कृष्णानन्द ने कुछ प्रकाशित और मौखिक परम्परागत काव्य, कहानियों आदि का अत्यंत संक्षिप्त रूप से उल्लेख किया था। उसमें कारस देव की गोटें के कथानक ने मुझे काफी आकर्षित किया। इस विषय पर अभी तक किसी ने भी कुछ कार्य नहीं किया है यहां तक कि इसकी सूचना देने वाले श्री कृष्णानन्द गुप्त जी

सम्बन्ध में बहुत सामान्यसा ज्ञान है । 'कारस देव की गोटें' की जानकारी के लिए मैं विशेष प्रयत्न करने लगा । बुंदेलखण्ड की ओर जाने के प्रथम प्रयास में अतर्रा के श्री हरप्रसाद शर्मा :अध्यापक: ने मुझे बतलाया कि वर्षों पूर्व बुंदेलखण्डी लोक गीतों के संग्रह के सिलसिले में झांसी के निकट मारहट गांव में उन्होंने कारसदेव की गोटें सुनी थीं जिसे वे लोग रात भर गाते रहे थे । श्री शर्मा ने अपनी संपादित पुस्तक 'बुंदेलखण्डी लोक गीत' दिखलायी जिसमें थोड़ी सी कारस देव की गोटें संकलित थीं लेकिन संग्रह के अधिकांश गीतों का अर्थ कुछ सुने हुए, कुछ सुनने में छूटने के कारण अपनी ओर से जुड़े और अनेकों मौलिक गीत संकलित थे अतः उनका कार्य नितान्त दोष पूर्ण था, संपादन,व्याख्या आदि भी अत्यन्त निम्न स्तर की थी । उन्होंने यह भी बतलाया कि २०।३।५२ को उन्होंने प्रयाग रेडियो स्टेशन में कारस देव की गोटी की पार्टी ले जाकर लगभग २० मिनिट की रिकार्डिंग करायी थी । मैंने जानना चाहा कि गायक क्या मुझे उपलब्ध हो सकते हैं, मैं उनसे कहां मिल सकता हूं । इस पर उन्होंने गोल-मटोल उत्तर दिया - मुख्य गायक मार डाला गया है, दूसरे लोग धार्मिक उत्सव के सिवा गाना बुरा मानते हैं । किसी को वे सुनाना नहीं चाहते हैं आदि ।

प्रयाग में मैंने वह रिकार्डिंग सुनी, वह रेडियो के लोक गीतों का अपवाद नहीं थी, नितान्त कृत्रिम ।

इसी बीच प्रयाग विश्व-विद्यालय ने 'कारस देव की गोटें' पर शोध कार्य करने की स्वीकृति प्रदान कर दी, परम विद्वान, बुंदेलखण्ड से परिचित डा० रामकुमार वर्मा के निर्देशन में मुझे रखा गया ।

मित्र, परिचित और अन्य व्यक्तियों की सहायता के प्रति तो आभार व्यक्त किया जा सकता है किन्तु गुरुजनों, बड़े-बूढ़ों के उपकारों से कभी उऋण नहीं हुआ जा सकता, मात्र उनके आदर्शों पर चल कर, कुछ अच्छे कार्य करके उन्हें कुछ सन्तोष दे सकते हैं ।

श्री कृष्णानन्द से मैंने विस्तृत रूप में पत्र-व्यवहार किया और रिकार्डिंग आदि के लिए आने की अनुमति चाही किन्तु कुछ कारणों वश उन्होंने असमर्थता प्रकट की, यद्यपि झांसी के आस पास कारस देव की गोटों के गायन की सूचना उन्होंने अवश्य

थी ।

झांसी के पास राठ (हमीरपुर) में मेरे बचपन के काफी मित्र थे । 'कारस देव की पूजा' यहां भी हो सकती है' संभावना मन में आयी, अतः मैं राठ गया । मेरे मित्र मुझसे मिल कर बहुत प्रसन्न हुए, मेरे कार्य के प्रयास की सराहना की और इस सम्बन्ध में पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया ।

राठ से १०-१५ मील दूर ठेठ गांव बरौनी में लोगों ने मेरे एक मित्र श्री राजेन्द्र गुपौलिया को 'कारस देव की गोटें' सुनने को निमंत्रित किया अतः 'चौथ' के दिन (आयोजन दिवस) चलने की योजना बनी । चौथ की दुपहर के समय हम लोग चलने के लिए तैयार हुए । जीप में पेट्रोल बहुत कम था । दुर्भाग्यवश राठ के दोनों पेट्रोल पंप बिल्कुल खाली थे । मैं बहुत उदास हुआ लेकिन राजेन्द्र ने प्रयास जारी रखा और कस्बे में जीप, ट्रक, बसों आदि के मालिकों से 'पेट्रोल-दान' लिया । जब पेट्रोल लेकर हम लोग चलने लगे तो बैट्री डाउन हो गयी । संयोगवश कुछ दिनों पूर्व 'एक्स्ट्रा चार्ज बैट्री' राजेन्द्र के पास थी । डाकुओं, जंगली जानवरों से सामना करने के लिए दो बंदूकधारी पीछे बैठे थे । बरौनी गांव का रास्ता बहुत-बहुत खराब था । छोटी सी पगडंडी नालों और गढ्ढों, कंटीली झाड़ियों, छोटी बड़ी चट्टानों, सूखी नदी आदि भरा था इस खराब रास्ते पर जिस कौशल से राजेन्द्र के मित्र ने जीप चलायी वह स्टंट फिल्म की कार ड्राइविंग की याद दिलाती थी ।

रात में कारस देव की गोटें सुनने के लिए मेरे साथ मित्र भी रात भर जागते रहे । दिसंबर महीने की ठिठुरती ठंड में खुले आकाश के नीचे मुस्कराते हुए ओस में भीगते रहे ।

इसके बाद मैंने अनेक विभिन्न स्थानों में जाकर कारस देव की गोटें सुनीं । हर पन्द्रहवें दिन, जिसे वह 'चौथ' कहते हैं, यह आयोजन होता है । गांव वालों के साथ मुझे भी 'निशा-जागरण' करना पड़ता था । कभी - कभी वर्षा हो जाने से दुरी गत बन जाती थी । इन स्थानों के मार्ग बहुत बीहड़ थे किन्तु बाद में मैं सफल 'पदयात्री' बन गया ।

राठ के निकटवर्ती गांव कुड़ेरा में कारस देव का बहुत बड़ा आयोजन होता है । आसपास के क्षेत्रों में कुड़ेरा की प्रसिद्धि सर्वाधिक है । कारस देव के गायन-पूजा के इस आयोजन को यहां की बोली में 'बैठक' कहा जाता है ।

सम्पूर्ण बुंदेलखण्ड में कारस देव की पूजा होती है। प्रत्येक गांव-कस्बे, नगर में उनका 'चबूतरा' :मंदिर: बना होता है। सामान्य रूप से यह चबूतरा गांव के बाहर होता है। चबूतरा पृथ्वी से कुछ ऊंचाई पर होता है। चबूतरे पर तिकोना : : या गोलाकार बड़ा सा खाला :खाना: बना होता है, उसके अन्दर कारस देव का वाहन 'घोड़ू' :घोड़ा: आधा अन्दर और आधा बाहर रहता है। घोड़ू के आस-पास नारियल, भस्म आदि के अवशिष्ट रहते हैं। घोड़ू पकी मिट्टी की छोटी मूर्ति होती है। चबूतरे में घोड़ू के सामने और आस-पास सामान्य रूप में नीम के पेड़ और बांस में झंडे होते हैं। पीछे की ओर त्रिशूल गड़े रहते हैं।

हर पन्द्रहवें दिन 'चौथ' को गांव के लोग अपने काम-काज से अवकाश पाकर चबूतरे के चारों ओर बैठ जाते हैं। चबूतरे पर सिर्फ पुजारी, गायक, वादक बैठते हैं। सब से पहले 'गौरा बाबा' का नाम लेकर नारियल फोड़ा जाता है और कारसदेव को प्रसाद चढ़ाया जाता है। पूजा समाप्त करने के बाद पुजारी, गायक, वादक गांजा आदि मादक वस्तुओं का पान करते हैं। कुछ समय के बाद पुजारी विचित्र व्यवहार, प्रलाप करने लगता है, तब लोग विश्वास करते हैं 'कारसदेव की सवारी' आ गयी है। श्रद्धानुसार उपहार, भेंट पुजारी को देकर शंका-समाधान कराते हैं। पुजारी कारसदेव के रूप में उत्तर देता है। 'ढाक' :डमरू के बड़े आकार का वाद्य यंत्र: बजाने वाला लगातार उसे बजाता रहता है।

शंका समाधान के पश्चात ढाक और करताल वादक उन्हें बजाने लगते हैं और प्रधान गायक के साथ स्वर अन्य लोग भी मिलाते हैं। यह आयोजन रात-रात भर चलता रहता है। गांव के सभी लोग श्रद्धा से इसे सुनते रहते हैं।

पुजारी के अलौकिक व्यवहार द्वारा शंका-समाधान में अंध विश्वास मात्र है। वह अपने मन से और गोल-मटोल उत्तर से समस्या का निदान करता है। रात के कारसदेव के समारोह में एक प्रौढ़ औरत शंका-समाधान के लिए पुजारी के पास आयी दिसंबर का कड़ा ठंड में भी काफी कम कपड़े पहिने थी। ठंड के कारण उसे जुकाम हो गया था। उसने विनय पूर्वक निवेदन किया -' महाराज, मेरे इकलौते बेटे की शादी का कार्य है। ऐसे शुभ अवसर में लगातार छींक क्यों आती है। इस अपशकुन का निवारण कर दीजिए।' पुजारी ने कहा-' तुम देवता को भूल गयी हो। समय पर उन्हें 'सीधा' :आटा-दाल आदि: नहीं चढ़ाती इसीलिए नाराज हैं।'

औरत ने गिड़गिड़ाकर क्षमा याचना की । पुजारी ने भभूत देकर कहा- "जाओ, बेटी, दो सप्ताह के अन्दर सब कुछ ठीक हो जायेगा ।"

कारसदेव की गोटें

(क) अर्थ- कारसदेव के सम्बन्ध में बुंदेलखण्ड के लोगों का विश्वास है कि वे शिव जी के गण हैं। एकलादी के अपमान के प्रतिशोध के लिए शिव के अंश से वे उत्पन्न हुए हैं। प्रस्तुत काव्य में भी एकलादी, राजा द्वारा अपमान से क्षुब्ध होकर शिव की तपस्या द्वारा प्रसन्न करती है, फलस्वरूप वरदान में शिव जैसे दो भाइयों की प्राप्ति होती है जो उसके अपमान का बदला लेने के बाद अपने तप के प्रभाव से शिव के दरबार में स्थान प्राप्त करते हैं।

बुंदेलखण्ड में कारस देव को 'कारस देव' भी कहते हैं। किन्तु आश्चर्य की बात यह है कि गायन में गायक सर्वत्र 'कारसदेव' कहते हैं।

कारसदेव का संस्कृत रूपान्तर होगा - 'कार्ष देव' : कृषक देवता। अहीर गड़रियों, बन्जारों के साथ कृषकों की भी कारस देव पर अत्याधिक आस्था है। राम के गण हनुमान की तरह बुंदेलखण्ड में शिव के गण कारसदेव पर जनता की श्रद्धा है। प्रत्येक गांव, कस्बे, शहर में उनका 'चबूतरा' बना होता है।

प्रस्तुत काव्य में कारसदेव के साथ उनका भाई सूरपाल भी है। दोनों का जन्म साथ-साथ होता है। शिव के वरदान से एकलादी को कुछ नदी में मिलता है। वह उसे झोली में लेकर घर आती है। घर की देहरी लांघते ही कुछ दो भाइयों में परिवर्तित हो जाता है -

"--- हे फुलवा जो बा गये बखिन जी की गोदऊ रे संभार
हे जब छगरो एकलादी घर में आरा हे
हे देहरी नांकत ही गये फड़ के लाल ---"

दोनों भाई बिल्कुल एक जैसे शक्ल- सूरत, डील-डौल, रंग, व्यवहार में हैं। सूरपाल को जब सर्प डस लेता है तब कारस सर्प के बिल में जाते हैं। सर्पिणी कारस और सूरपाल की समानता देख कर चकित होती है -

"--- दोरी सूरत सूरत की दो दौ रो भैया कहिये उन धार की"

प्रस्तुत काव्य के पूर्वार्द्ध में शूरपाल की प्रमुखता है। यह बहन को अपमानित करने वाले राजा गजकृष्ण आदि को पराजित करता है। उत्तरार्द्ध में शूरपाल के सर्प दंशित होने पर कारख, सर्प को पराजित करके उससे विषपान करा के, भाई को पुनर्जीवित करने का कार्य करता है। कारख का उत्तरार्द्ध में प्रधानता है। अन्त में दोनों भाईयों की समान प्रधानता है। शूरपाल और कारख दोनों हिमालय में तप कर के हरि दरबार में स्थान प्राप्त करते हैं। मान्धी के विवाद में भी वे आते हैं। अतः दोनों भाई समान रूप से नायक हैं।

प्रस्तुत काव्य के अनुसार कारख देव का स्पष्ट अर्थ होगा -' काला देवता।' "कारख"- वास्तविक नाम है, 'देव' की सहायक जोड़ दिया गया है। सर्प के घर में कारख होते सर्प को जला देता है। क्रोधवश सर्प का जहर भरी फुफकारों से वह काला हो जाता है और तभी से उसका नाम परिवर्तित होकर 'कारख' हो जाता है -

'- - घर फुफकारे नागा जी रे ऊधा जी की ओर
गोरे के कन्हैया कारे पड़ जायें
हां जी अरे ऐसे ऊधा जी के पलटे कारख के नामा हो - - -'

कारख का पूर्ववर्ती नाम ऊधा, कन्हैया, जसोदी, द्वापरी समझना उचित है क्योंकि शूरपाल को भी अनेक स्थानों में इन्हीं सम्बोधनों से संबोधित किया गया है।-

शत्रु के राज्य में शराब की दुकान पर कलारिन के दुर्व्यवहार से शूरपाल क्रुद्ध होता है -

'- - - जारे कन्हैया की आंख ललायी पड़ गयी
फड़कन लगे मुंह के बाल - - - - - -'

शत्रु सेना के लिए माया फैलाने के लिए शूरपाल ने - - - - -

'- - - सन्ध संवारे ऊधा ने लगा लये गुरुजन से पूरे ध्यान - - -'

शूरपाल और कारख के सेवक मांखा ने अनेक बार 'जसोदी' कहा गया है :-

' मांखा जसोदी हाथ जोड़ विनती करे के मारो पड़े लाचार ---'

कृष्ण द्वापर के राजा थे, यशोदा के पालित पुत्र थे इसी लिए उन्हें द्वापरी, जसोदी कहा जाता है। उनके अनेक विशेषणों में कन्हैया भी एक है। ऊधा या ऊधा सांवले रंग वर्ण व्यक्ति के लिए कहा जाता है। किन्तु वास्तव में विशेषण जनता में सामान्य संबोधन के प्रतीक हैं। कार्य-कलाप, कथानक, चरित्र, फल आदि की दृष्टि से कारख और शूरपाल समान रूप से नायक हैं अतः कारख मात्र को प्रधानता देना उचित

नहीं है।

वास्तव में कारस शब्द संस्कृत के 'कार' और 'स' से मिल कर बना है, जिसका अर्थ बुद्धिमान, श्रेष्ठ, उत्तम कार्य करने वाला होता है।

कारस और हरपाल दोनों ही बुद्धिमत्ता से बिना रक्तपात किये वशिष्ठ के अपमान का बदला लेते हैं और केवल उत्तम कार्य संपादित करके देवत्व को प्राप्त करते हैं। संभवतः 'कारसदेव' 'महादेव' के समीकरण पर बना है। 'महादेव' का अर्थ 'देवताओं में श्रेष्ठ' होता है किन्तु यह शिव के लिए रूढ़ है।

:ख: उत्पत्ति- 'गोटें' शब्द 'गोटी' का बहुवचन है या 'गोष्ठी' या 'गोठी' से बना है, कहना बहुत कठिन है। सामान्य रूप से 'चौथ' के दिन 'कारसदेव की बैठक' होती है और बैठक में कारसदेव को बुलाया जाता है, उनकी प्रशस्ति के साथ अन्य गायन आदि होता है।

गोटी के बहुवचन के अर्थ में 'गोटें' का अर्थ 'युक्ति' या 'उपाय' भी होता है। कारसदेव ने 'जिस युक्ति' से वशिष्ठ के अपमान का बदला लिया, अन्य कार्य किये, हरि के गुण गाये आदि उनको पुजारी, भक्त, गायक आदि चौथ के दिन की बैठक :गोठी: में सुनते सुनाते हैं।

इस प्रकार कारसदेव की 'गोटें' के अर्थ निकलते हैं - 'कारस :काला: देवता की गोष्ठी', 'कारस :काला: देव की युक्तियां', बुद्धिमान, श्रेष्ठ, उत्तम कार्य करने वाले देव की बैठक', 'बुद्धिमान, श्रेष्ठ, उत्तम कार्य करने वाले देवता की युक्तियां।'

क्योंकि कारस और हरपाल का अस्तित्व प्रस्तुत काव्य में बिल्कुल घुला-मिला समान है इसी लिए 'बुद्धिमान, श्रेष्ठ, उत्तम कार्य करने वाले देव की युक्तियां या बैठक' का अर्थ कारस देव की गोटें के लिए अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है।

भारत में आर्य-अनार्य के एकीकरण के प्रयास गौरवर्णी आर्यों के देवों के अनार्यों ने और श्यामवर्णी अनार्यों के देवों को आर्यों ने अपने उच्चतम देव के समकक्ष स्थान दिया। बुंदेलखण्ड में आदि वासी अनार्यों के साथ आर्यों के एकीकरण के प्रयास में संभव है 'कारसदेव' की गोटें में एक को काला और दूसरे को गौरवर्णी रखा गया हो या बना दिया गया हो।

मेरी रिकार्डिंग लगभग १६ घण्टे लंबी थी । इसमें कुढ़ेरा के गायकों के साथ राठ के भी गायक सम्मिलित थे । कथानक का प्रारम्भ राठ के गायक ब्रजलाल यादव ने किया, ढाक की बंदी कुम्हार ने बजाया और अन्य लोगों ने स्वर भरा । ब्रजलाल ने प्रारम्भ से लेकर मेवल कुम्हार के घोड़ा बनाने के लिए चक्र चलाने तक गाया था । शेष दो-तिहाई भाग कुढ़ेरा के प्रसिद्ध गायक मोतीलाल ने गाया और ढाक लाल दीवान ने बजायी । ब्रजलाल की आयु ४०-४५ वर्ष के लगभग थी और एक-दो क्लास तक प्राइमरी की शिक्षा प्राप्त की है । पेशे से वह किसान है । मोतीलाल बिल्कुल अशिक्षित ४०-४५ की आयु का गड़रिया है । वह बहुत ही बुद्धिमान है । बुंदेली के सिवा कोई भी दूसरी बोली उसे नहीं आती है ।

गायन का प्रारम्भ ही --- "ओं, हुं - - -ऊं" से किया जाता है । हर पद के अन्त में वह गायक दोनों कान में अंगुलियां रखकर, सिर हिलाते हुए "हा - - आ या हां- - - आं - -" की पकड़ कर आगे पंक्ति शुरू करता है ।

वातावरण के एल० एस० डी० सेवन की तरह कल्पना जाग्रत करने के लिए गायक-वादक गायन के दौरान में, धुएं में बेतहाशा गांजे के कश लगाते हैं । पूरा घर गांजे के धुएं, तम्बाकू, गंदगी से भरा रहता था । मैं बीड़ी, सिगरेट, गांजे आदि के धुएं के प्रति एलर्जिक हूं अतः मुझे मर्ज़ की यातना सहने के लिए विवश होना पड़ता था । श्री रमेश के घर में खाना, मकान की सफाई, बच्चों के कपड़े आदि का सारा कार्य उनकी पत्नी अकेले करती है । कुछ साथ तीन छोटे बच्चों को नहलाने, खेलने-खिलाने में व्यस्त रहती हैं । आरकाइव की रिकार्डिंग के समयावश्यक कार्यवश साथी को बाहर जाना पड़ा, श्री रमेश भी काम-काज के सिलसिले में कानपुर उसी समय गये, ऐसी कठिन स्थिति में घर, बच्चों की देखभाल आदि के साथ कुढ़ेरा के अच्छी खुराक के गायकों के लिए उन्हें खाना बनाने में बहुत परेशानी उठानी पड़ीं । सुबह से आधी रात तक वह बिना आराम के काम-काज में व्यस्त रहीं । पूरे घर में फैले गांजे के बदबूदार धुएं, ढाक और गायकों के घंटों गायन के शोर ने निश्चय ही उनके सिर में दर्द पैदा कर दिया होगा । लगभग दो माह तक मैं श्री रमेश के यहां था । कुछ दिनों तक मैं उनका अतिथि था, किन्तु शीघ्र ही उनके परिवार ने मुझे अपना अभिन्नअंग.

सदस्य बना लिया । उनकी हार्दिक कामना थी कि मैं उनके साथ रहूं किन्तु मैं विवश था । मेरी विदाई के समय उनकी आंखें भरी थीं, मुझे भी ऐसा महसूस हो रहा था मानों मैं अपने घर से बिछुड़ रहा हूं ।

डा० रामकुमार वर्मा, निर्देशक ; मेरे कार्य से काफी प्रसन्न हैं । उन्होंने सदैव उत्साहित किया । अपने अमूल्य सुझावों और अनुभवों द्वारा मेरे शोध-कार्य की सही रूपरेखा प्रस्तुत करने में पूर्ण सहायता की । डा० वर्मा की सब से बड़ी अच्छाई उनके 'मेथड' में है । वह अपने विचार, भाव, ज्ञान को विद्यार्थी पर आरोपित न करके विद्यार्थी के व्यक्तित्व को निर्मित करने का अवसर देते हैं ।

मैं उनका बहुत-बहुत आभारी हूं ।

---0---

कारसदेव की गोटें : लौकिक वीर काव्य

विषय-सूची

पृष्ठसंख्या

प्रथम अध्याय : कथावस्तु --- --- १ से २८

(कथानक, कथानक निर्माण; प्रबन्ध की विशेषतायें -- समान नायकत्व, नायिका का अभाव, शिव का अवतार, अहिंसात्मक युद्ध-विजय, सर्प-प्रतिज्ञा, परिवार त्याग)

द्वितीय अध्याय : प्रबन्ध पर विविध प्रभाव तथा शंका समाधान - २९ से ४१

(पौराणिक प्रभाव - शिव, कृष्ण, देवी, बौद्ध प्रभाव)

तृतीय अध्याय : प्रबन्ध का शैली पक्ष --- ४२ से ५९

(भाषा, शैली)

चतुर्थ अध्याय : मूल पाठ --- --- १ से ५५

पंचम अध्याय : व्याख्या --- --- ५६ से ११३

-0-